

जय अम्बे गौरी आरती

संपूर्ण हिंदी पाठ • पद 1-7

01

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी॥
जय अम्बे गौरी॥

02

माँग सिंदूर विराजत, टीको मृगमद को।
उज्ज्वल से दोउ नैना, चन्द्रवदन नीको॥
जय अम्बे गौरी॥

03

कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै।
रक्तपुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै॥
जय अम्बे गौरी॥

04

केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्परधारी।
सुर नर मुनिजन सेवत, तिनके दुखहारी॥
जय अम्बे गौरी॥

05

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योति॥
जय अम्बे गौरी॥

06

शुम्भ निशुम्भ बिदारे, महिषासुर घाती।
धूम्र विलोचन नैना, निशिदिन मदमाती॥
जय अम्बे गौरी॥

07

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे॥
जय अम्बे गौरी॥

जय अम्बे गौरी आरती

संपूर्ण हिंदी पाठ • पद 8-13

08

ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी॥
जय अम्बे गौरी॥

09

चौंसठ योगिनी मंगल गावत, नृत्य करत भैरों।
बाजत ताल मृदंगा, अरु बाजत डमरु॥
जय अम्बे गौरी॥

10

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुख हरता, सुख सम्पत्ति करता॥
जय अम्बे गौरी॥

11

भुजा चार अति शोभित, वर मुद्रा धारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी॥
जय अम्बे गौरी॥

12

कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती।
श्रीमालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति॥
जय अम्बे गौरी॥

13

श्री अम्बेजी की आरती, जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पत्ति पावे॥
जय अम्बे गौरी॥

पाठ में क्षेत्रीय शब्दभेद हो सकते हैं।

आरती का सरल भाव

पदों का क्रम ऊपर दिए पाठ के अनुसार है

1. माता अम्बे को प्रणाम। हरि, ब्रह्मा और शिव उनका नित्य ध्यान करते हैं।
2. सिंदूर, कस्तूरी का टीका, उज्ज्वल नेत्र और चंद्र जैसे मुख का वर्णन है।
3. सोने जैसे तेजस्वी स्वरूप, लाल वस्त्र और लाल फूलों की माला की स्तुति है।
4. सिंह पर विराजमान, खड्ग और खप्पर धारण करने वाली माता की सेवा देव, मनुष्य और मुनि करते हैं।
5. कुण्डल, नासिका के मोती और सूर्य-चंद्र जैसी ज्योति का वर्णन है।
6. शुम्भ, निशुम्भ और महिषासुर पर माता की विजय का स्मरण है।
7. चण्ड, मुण्ड, रक्तबीज तथा मधु-कैटभ के संहार से देवताओं का भय दूर होने की स्तुति है।
8. माता को ब्रह्माणी, रुद्राणी, कमला और शिव की पटरानी कहा गया है।
9. योगिनियों के मंगल गायन, भैरव के नृत्य और वाद्यों का वर्णन है।
10. माता को जगत की जननी, पालनहार और दुख हरने वाली माना गया है।
11. चार भुजाओं और वरदान देने की मुद्रा की स्तुति है। फल की पंक्ति श्रद्धा का कथन है।
12. आरती के थाल, अगर, कपूर और दीपों की ज्योति का वर्णन है।
13. अंत में शिवानन्द स्वामी का नाम और आरती गाने का भक्तिपूर्ण फल-वर्णन आता है।

यह धार्मिक पाठ और भावार्थ है; फल की गारंटी नहीं।

शब्दभेद के लिए अपने परिवार या मंदिर के पाठ से मिलान करें।